



29 February, 2024

कर्नाटक हिंदू धार्मिक संस्थान और धर्मार्थ बंदोबस्ती (संशोधन) विधेयक

संदर्भ: कर्नाटक हिंदू धार्मिक संस्थान और धर्मार्थ बंदोबस्ती (संशोधन) विधेयक को हाल ही में राज्य विधानसभा द्वारा अनुमोदित किया गया था लेकिन विधान परिषद में इसे हार का सामना करना पड़ा।

➤ मंदिर कराधान में प्रस्तावित परिवर्तन:

- इस संशोधन विधेयक में 1 करोड़ रुपये से अधिक वार्षिक आय वाले मंदिरों की सकल आय का 10% मंदिर के रखरखाव के लिए एक सामान्य पूल में डालने का प्रस्ताव है। इससे पहले, वार्षिक रूप से 10 लाख रुपये से अधिक कमाने वाले मंदिरों की शुद्ध आय का 10% इस पूल को निर्देशित किया जाता था।
- सकल आय से तात्पर्य मंदिर की कुल आय अर्जन क्षमता से है, जबकि शुद्ध आय की गणना खर्चों में कटौती के बाद की जाती है।
- इसके अतिरिक्त, 10 लाख रुपये से 1 करोड़ रुपये के बीच आय वाले मंदिरों की आय का 5% सामान्य पूल में आवंटित किया जाएगा, जिससे पिछली आय सीमा 5 लाख रुपये से बदलकर 10 लाख रुपये हो जाएगी।

➤ सामान्य निधि का उद्देश्य:

- सामान्य निधि की स्थापना 2011 में भाजपा सरकार द्वारा धार्मिक अध्ययन, मंदिर रखरखाव और धर्मार्थ कार्यों का समर्थन करने के लिए की गई थी।
- प्रस्तावित संशोधनों का उद्देश्य अतिरिक्त 60 करोड़ रुपये उत्पन्न करना है, जिससे उच्च आय वाले मंदिरों को लाभ होगा।

➤ अन्य प्रस्तावित परिवर्तन:

- इस विधेयक में मंदिर प्रबंधन समिति में विश्वकर्मा हिंदू मंदिर वास्तुकला और मूर्तिकला में कुशल एक सदस्य को शामिल करने का प्रस्ताव है।
- इस विधेयक ने राज्य धार्मिक परिषद को इन समितियों के अध्यक्ष की नियुक्ति करने का अधिकार दिया।
- इस संबंध में राज्य सरकार को 25 लाख रुपये से अधिक की वार्षिक आय वाले मंदिरों के लिए मंदिर तीर्थयात्रा की सुविधा प्रदान करने वाली ढांचागत परियोजनाओं की देखरेख के लिए जिला-स्तरीय और राज्य उच्च-स्तरीय समितियों की स्थापना करने की आवश्यकता होगी।

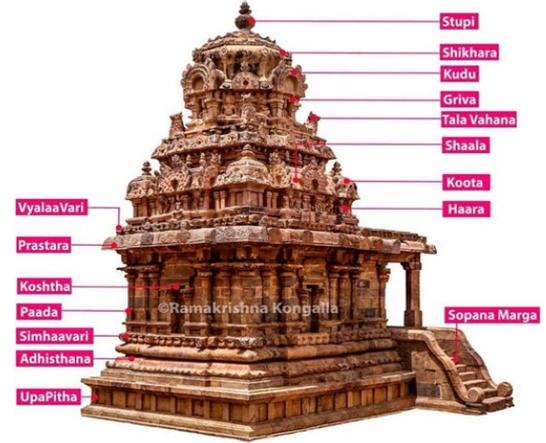
➤ अन्य राज्यों के साथ तुलना:

- यह विधेयक तेलंगाना के समान एक मॉडल अपनाता है, जहां मंदिर अपनी वार्षिक आय का एक प्रतिशत कॉमन गुड फंड में दान करते हैं। इस फंड का उपयोग मंदिर के रखरखाव और नए मंदिरों की स्थापना के लिए किया जाता है।
- दूसरी ओर, केरल, राज्य संचालित देवास्वोम बोर्डों के माध्यम से मंदिरों का प्रबंधन करता है। प्रत्येक बोर्ड का अपना एक बजट और मंदिर प्रशासन को नियंत्रित करने वाले कानून होते हैं।

➤ द्रविड़ शैली के मंदिर:

- द्रविड़ शैली के मंदिर एक परिसर में दीवार के भीतर घिरे हुए होते हैं, जिसके सामने की दीवार में एक केंद्रीय प्रवेश द्वार होता है, जिसे गोपुरम कहा जाता है।
- तमिलनाडु में मुख्य मंदिर शिखर, जिसे विमान के नाम से जाना जाता है, उत्तर भारतीय मंदिरों में देखे जाने वाले घुमावदार शिखर के विपरीत, एक सीढ़ीदार पिरामिड आकार का होता है।
- दक्षिण भारतीय मंदिरों में, 'शिखर' शब्द शीर्ष पर मुकुट तत्व को संदर्भित करता है, जो एक छोटे स्तूपिका या अष्टकोणीय गुंबद जैसा दिखता है, जो उत्तर भारतीय मंदिरों में आमलक और कलश के बराबर है।
- द्वारपाल गर्भगृह या गर्भगृह के प्रवेश द्वार की रक्षा करते हैं।
- मंदिर परिसरों में अक्सर एक बड़ा जलाशय होता है।

- कुछ सबसे पवित्र दक्षिण भारतीय मंदिरों में मुख्य गर्भगृह के ऊपर छोटी मीनारें हैं, क्योंकि यह आमतौर पर मंदिर का सबसे पुराना हिस्सा है।
- सहायक मंदिरों को मुख्य मंदिर शिखर के भीतर शामिल किया जा सकता है या मुख्य मंदिर के बगल में अलग छोटे मंदिरों के रूप में स्थित किया जा सकता है।
- एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर द्रविड़ शैली के मंदिर का एक प्रसिद्ध उदाहरण है।



- द्रविड़ मंदिरों को उनके आकार के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है, जो वर्गाकार (कूट), आयताकार (शाला), अण्डाकार (गज-पृष्ठ), गोलाकार (वृत्त), या अष्टकोणीय (अष्टस्र) हो सकते हैं।

क्रोमोफोर्स और क्वांटम कंप्यूटिंग

संदर्भ: शोधकर्ता कमरे के तापमान वाले क्वांटम कंप्यूटर के लिए 'रंग अणुओं' सहित विभिन्न भौतिक प्रणालियों का उपयोग करके लागत को कम करने के लिए वैकल्पिक, सरलीकृत प्रौद्योगिकियों की खोज कर रहे हैं।

➤ क्रोमोफोर्स और उत्प्रेरक अवस्थाएँ:

- जापानी टीम द्वारा हालिया अध्ययन की गई प्रणाली में धातु घटक के रूप में प्रयुक्त जिर्कोनियम, क्रोमोफोर पेंटासीन युक्त कार्बनिक अणु से संबंधित हुआ होता है।
- क्रोमोफोर कार्बनिक अणु होते हैं जो प्रकाश के विशिष्ट रंगों को अवशोषित करते हैं, जिससे वस्तुओं के वास्तविक रंग प्रभावित होते हैं।
- अपनी मूल अवस्था में, एक क्रोमोफोर अणु में विपरीत स्पिन दिशाओं वाले इलेक्ट्रॉनों के साथ एक एकल विन्यास होता है।
- प्रकाश अवशोषण एक क्रोमोफोर अणु को एकल अवस्था में प्रवेश करने के लिए प्रेरित करता है, जहां एक इलेक्ट्रॉन विपरीत अवस्था बनाए रखते हुए उच्च ऊर्जा स्तर पर संक्रमण करता है।

➤ एकल विखंडन और ऊर्जा स्थानांतरण:

- एकल विखंडन तब होता है जब एक एकल उत्तेजित अवस्था वाला क्रोमोफोर ऊर्जा को पड़ोसी क्रोमोफोर में स्थानांतरित करता है, जिससे वह त्रिक उत्तेजित अवस्था में संक्रमण के लिए प्रेरित होता है।
- इस प्रक्रिया में अतिरिक्त ऊर्जा का विमोचन शामिल है, जिससे क्रोमोफोर का एकल उत्तेजित अवस्था से त्रिक उत्तेजित अवस्था में संक्रमण शुरू होता है।
- आणविक ढाँचे (MORF नेटवर्क) क्रोमोफोर्स को थोड़ा घूमने में सक्षम बनाते हैं, जिससे आसन्न क्रोमोफोर्स के बीच परस्पर क्रिया की ताकत नियंत्रित होती है।

➤ त्रिक अवस्थाओं की स्थिरता:

- क्रोमोफोर्स के बीच परस्पर क्रिया परिणामी त्रिक अवस्थाओं में सुसंगतता बनाए रखते हुए एकल विखंडन की सुविधा प्रदान करती है।

Face to Face Centres





29 February, 2024

- कमरे के तापमान पर भी, त्रिक अवस्थाओं के सुपरपोजिशन की सुसंगतता एक माइक्रोसेकंड के एक अंश तक बनी रहती है, जो बेहद कम तापमान की आवश्यकता वाले अन्य क्वबिट सिस्टम की तुलना में एक उल्लेखनीय उपलब्धि है।

➤ **वर्तमान निहितार्थ और भविष्य की रूपरेखा:**

- कमरे का तापमान क्वैबिट एक महत्वपूर्ण प्रगति का प्रतिनिधित्व करता है, जो संभावित रूप से क्वांटम कंप्यूटिंग से जुड़ी लागत और जटिलता को कम करता है।
- क्वांटम संचालन प्रणालियों में नियंत्रण प्राप्त करने के लिए कई शोध समूहों द्वारा और अधिक शोध की आवश्यकता है।

➤ **क्रोमोफोर्स:**

- क्रोमोफोर, ग्रीक शब्द "क्रोमा" से बना है जिसका अर्थ है रंग और "फोरोस" जिसका अर्थ है वाहक, एक अणु है जो एक विशिष्ट तरंग दैर्घ्य पर प्रकाश को अवशोषित करता है, जिसके परिणामस्वरूप रंग का उत्सर्जन होता है।
- प्रकाश को अवशोषित और उत्सर्जित करने की क्षमता के कारण क्रोमोफोर्स को आमतौर पर रंगीन अणुओं के रूप में भी जाना जाता है।
- प्रकृति में क्रोमोफोर्स के उदाहरणों में क्लोरोफिल भी शामिल है, जो पत्तियों को हरा रंग प्रदान करता है, और लाल रक्त कोशिकाओं में पोर्फिरिन, यह रक्त के लाल रंग के लिए जिम्मेदार है।

➤ **ऊर्जा अवशोषण और उत्प्रेरण:**

- क्रोमोफोर्स एक इलेक्ट्रॉन को उसकी मूल अवस्था से उत्प्रेरित करके प्रकाश को अवशोषित करते हैं, जिससे अणु में एक संरचनात्मक परिवर्तन होता है।
- जैविक प्रणालियों में, क्रोमोफोर्स प्रकाश ऊर्जा को संग्रहित करने या पता लगाने सहित विभिन्न शारीरिक प्रतिक्रियाओं को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

➤ **धातु कॉम्प्लेक्स क्रोमोफोर्स:**

- कुछ क्रोमोफोर में क्लोरोफिल और हीमोग्लोबिन जैसे लिगेंड के साथ धातु परमाणु भी होते हैं।
- धातु-मैक्रोसायकल कॉम्प्लेक्स अपने अत्यधिक संयुग्मित पाई-बॉन्डिंग सिस्टम के कारण दृश्य प्रकाश को अवशोषित करता है, इसके अवशोषण प्रक्रिया को प्रभावित करती है।

➤ **ऑक्सोक्रोम और हेलोक्रोमिज्म:**

- क्रोमोफोर्स से जुड़े ऑक्सोक्रोम समूह अपने प्रकाश-अवशोषित गुणों को संशोधित करते हैं, तरंग दैर्घ्य या अवशोषण की तीव्रता को बदलते हैं।
- हेलोक्रोमिज्म तब होता है जब पदार्थ PH में परिवर्तन के आधार पर रंग बदलते हैं, PH संकेतकों की आणविक संरचना क्रोमोफोर्स को प्रभावित करती है, जिससे रंग में परिवर्तन होता है।

बायोट्रिग (BioTRIG)

संदर्भ: शोधकर्ताओं ने बीपीएल ग्रामीण समुदायों को लाभ पहुंचाने के लिए ग्रामीणों के कचरे का उपयोग करने वाली एक सामुदायिक-स्तरीय पायरोलिसिस प्रणाली "बायोटीआरआईजी" का प्रस्ताव दिया है।

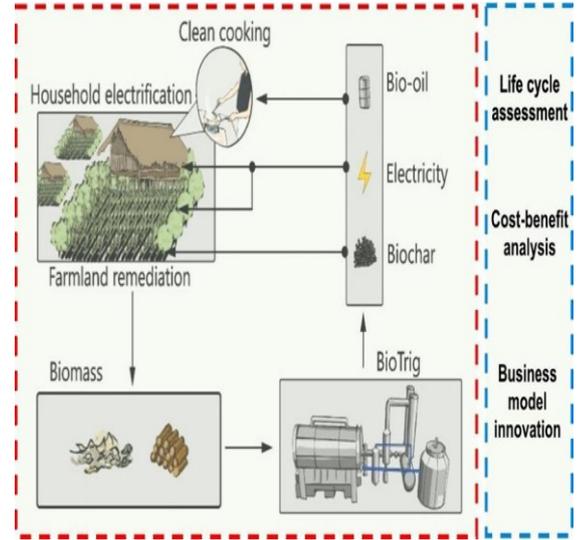
➤ **परिचय:**

- "बायोट्रिग" परियोजना एक नवीन पायरोलिसिस प्रणाली का प्रस्ताव करती है जिसका उद्देश्य भारत में ग्रामीण कचरे का उपयोग करना है, विशेष रूप से गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले समुदायों को लक्षित करना है।
- इसका उद्देश्य पर्यावरणीय और आर्थिक चुनौतियों का समाधान करते हुए इन वंचित समुदायों को कई लाभ प्रदान करना है।

➤ **पायरोलिसिस प्रक्रिया:**

- पायरोलिसिस एक रासायनिक पुनर्चक्रण विधि है जो कार्बनिक पदार्थों को उपयोगी रसायनों में बदल देती है।
- इस प्रक्रिया में कचरे को ऑक्सीजन मुक्त कक्ष में सील करना और इसे 400 डिग्री सेल्सियस से ऊपर गर्म करना शामिल है।

- तीन मुख्य उत्पाद उत्पन्न होते हैं: बायो-तेल, सिनगैस, और बायोचार उर्वरक, जिनके विभिन्न अनुप्रयोग हैं।



➤ **शोध अंतर्दृष्टि:**

- ओडिशा में 1,200 ग्रामीण परिवारों की जरूरतों और प्राथमिकताओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए एक व्यापक सर्वेक्षण किया गया।
- इन सर्वेक्षण निष्कर्षों से पता चला कि 80% से अधिक उत्तरदाता स्वच्छ खाना पकाने के विकल्पों को अपनाने में रुचि रखते थे।
- लगभग सभी प्रतिभागियों ने विश्वसनीय ग्रिड बिजली की तीव्र इच्छा व्यक्त की, जबकि लगभग 90% जैव ऊर्जा पहल का समर्थन करने के लिए कृषि अपशिष्ट बेचने के इच्छुक थे।

➤ **बायोट्रिग के लाभ:**

- पायरोलिसिस प्रणाली द्वारा उत्पादित जैव-तेल और सिनगैस इस प्रक्रिया को स्वयं संचालित कर सकते हैं और स्थानीय घरों को बिजली प्रदान कर सकते हैं।
- बायोचार, एक अन्य उपोत्पाद, मिट्टी की उर्वरता बढ़ाता है और कार्बन पृथक्करण में सहायता करता है।
- बायोट्रिग को अपनाने से ग्रामीण क्षेत्रों में इनडोर वायु प्रदूषण और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी आ सकती है।

➤ **संभावित प्रभाव:**

- कंप्यूटर सिमुलेशन से संकेत मिलता है कि बायोटीआरआईजी के व्यापक कार्यान्वयन से प्रति व्यक्ति ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में पर्याप्त कमी आ सकती है।
- यह संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों के अनुरूप है, विशेष रूप से भारत में ग्रामीण समुदायों के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने में।

➤ **व्यापार प्रतिदर्श:**

- BioTRIG को अपनाने की सुविधा के लिए दो नवीन व्यवसाय मॉडल प्रस्तावित किए गए हैं।
- इनमें पायरोलिसिस इकाइयों की स्थापना और संचालन को वित्तपोषित करने, नौकरी के अवसर पैदा करने और सामाजिक लाभ पहुंचाने के लिए निजी क्षेत्र की भागीदारी शामिल है।
- वैकल्पिक रूप से, समुदाय मुफ्त जैव-उत्पादों, जैसे बायोचार और रियायती जैव-तेल के बदले में अपशिष्ट फीडस्टॉक प्रदान करके भाग ले सकते हैं।





NEWS IN BETWEEN THE LINES

हाइड्रोजन ईंधन सेल फ़ेरी नाव



हाल ही में, भारत के प्रधान मंत्री ने तमिलनाडु के थूथुकुडी से वर्चुअल मोड में भारत की पहली स्वदेश निर्मित हाइड्रोजन ईंधन सेल फ़ेरी नाव का उद्घाटन किया। हाइड्रोजन ईंधन सेल फ़ेरी नाव के बारे में:

- हाइड्रोजन ईंधन सेल फ़ेरी नाव भारत में अपनी तरह की पहली नाव है।
- इस जहाज का निर्माण पूरी तरह से भारत में कोचीन शिपयार्ड में किया गया था, जो देश की स्वदेशी जहाज निर्माण क्षमताओं को प्रकट करता है।
- इसमें अत्याधुनिक हाइड्रोजन ईंधन सेल तकनीक शामिल है, जो स्वच्छ ऊर्जा विकल्पों और कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए भारत की प्रतिबद्धता पर जोर देती है।
- यह फ़ेरी नाव (जहाज) 50 यात्रियों को ले जाने की क्षमता वाला 24 मीटर का कैटामरन है, जो यात्री आराम के लिए पूरी तरह से वातानुकूलित स्थानों से सुसज्जित है।
- नाव का उद्देश्य टिकाऊ शहरी परिवहन समाधानों की बढ़ती आवश्यकता को संबोधित करते हुए, सहज और आसान परिवहन विकल्प प्रदान करके शहरी गतिशीलता में सुधार करना है।
- हाइड्रोजन ईंधन सेल फ़ेरी नाव का लॉन्च भारत के राष्ट्रीय लक्ष्यों के अनुरूप है जिसमें स्वच्छ ऊर्जा समाधानों के प्रति प्रतिबद्धता और शुद्ध-शून्य उत्सर्जन वाले भविष्य की खोज शामिल है।

अधिर्वर्ष (Leap Year)



आज 29 फरवरी है, जो 2024 को अधिर्वर्ष बनाता है।

अधिर्वर्ष के बारे में:

- अधिर्वर्ष एक ऐसा कैलेंडर वर्ष होता है जिसमें एक अतिरिक्त दिन, 29 फरवरी, शामिल होता है। यह पृथ्वी की सूर्य के चारों ओर की कक्षा के साथ कैलेंडर के अंतर को समायोजित करने के लिए किया जाता है।
- प्रत्येक चार वर्ष में एक अधिर्वर्ष होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पृथ्वी को अपनी कक्षा पूरी करने में लगभग 365 दिन, 5 घंटे, 48 मिनट और 46 सेकंड का अतिरिक्त समय लगता है।
- अधिर्वर्ष की अवधारणा 46 ईसा पूर्व में जूलियस सीजर द्वारा नियुक्त विद्वानों द्वारा शुरू की गई थी, जिसे बाद में 12 ईस्वी में और परिष्कृत किया गया।
- 16वीं शताब्दी में, पोप ग्रेगोरी XIII ने ग्रेगोरियन कैलेंडर प्रस्तुत किया, जिसने कैलेंडर को खगोलीय अवलोकनों के साथ अधिक सटीक रूप से संरेखित करने के लिए 1582 में 10 दिनों को हटाकर अधिर्वर्ष प्रणाली को समायोजित किया।
- जबकि अधिर्वर्ष प्रायः हर चार साल में होते हैं, 00 में समाप्त होने वाले वर्षों के लिए अपवाद बनाए जाते हैं, जो 400 से विभाज्य न होने पर अधिर्वर्ष नहीं होते हैं।
- अधिर्वर्ष का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कैलेंडर पृथ्वी की कक्षा के साथ समन्वयित रहे और समय मापन में निरंतरता बनाए रखे।

भांग का पौधा (Cannabis Plant)



हाल ही में, मनोदशा और अनुभूति पर इसके कथित प्रभावों के कारण मनोचिकित्सकों के बीच भांग की चिकित्सीय क्षमता में रुचि बढ़ रही है, जिससे इसके संभावित चिकित्सीय अनुप्रयोगों में महत्वपूर्ण शोध हो रहा है।

भांग के पौधे के बारे में:

- भांग का पौधा, जिसे वैज्ञानिक रूप से कैनाबिस सैटिवा के नाम से जाना जाता है, कैनाबेसी (Cannabaceae) परिवार से संबंधित है और इसके विशिष्ट गुणों और योगिकों की विशेषता है।
- शोधकर्ताओं ने विभिन्न मनोरोग स्थितियों जैसे स्किज़ोफ्रेनिया, द्विध्रुवी अवसाद और भांग के उपयोग संबंधी विकारों के प्रबंधन में कैनाबिस-आधारित योगिकों, जैसे कि कैनाबिडिओल (सीबीडी) के उपयोग का पता लगाने के लिए नैदानिक परीक्षण शुरू किए हैं।
- कैनाबिस सैटिवा में प्रमुख मनोविकृति (psychotomimetic) कारक डेल्टा-9-टेट्राहाइड्रोकैनाबिनोल (टीएचसी) है जबकि कैनाबिडिओल (सीबीडी) अपने संभावित मनोविरोधी, सूजन रोधी और तंत्रिका रक्षी गुणों के लिए दिलचस्पी का विषय बन रहा है।
- मानव कैनाबिनॉइड प्रणाली में कैनाबिनॉइड रिसेप्टर्स सीबी1 और सीबी2 शामिल होते हैं जिनमें आनंदामाइड जैसे प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले पदार्थ इन्हें उत्तेजित करते हैं।
- एंडोकैनाबिनॉइड प्रणाली (ईसीएस) शरीर के विभिन्न कार्यों जैसे दर्द, स्मृति, नींद और भूख को नियंत्रित करती है।
- भांग और इसके व्युत्पन्न, जिसमें टीएचसी और सिंथेटिक कैनाबिनॉइड शामिल हैं, का चिकित्सा अनुप्रयोग भूख बढ़ाने, कीमोथैरेपी से जुड़े मतली को प्रबंधित करने और तीव्र और पुराने दर्द सिंड्रोम के इलाज में किया जाता है।

जकारांडा वृक्ष (Jacaranda Tree)



हाल ही में, मेक्सिको में जकारांडा के पेड़ों के जल्दी खिलने ने जलवायु परिवर्तन पर एक गंभीर बहस छेड़ दी है क्योंकि वैज्ञानिक इस घटना को जलवायु परिवर्तन से जोड़ रहे हैं।

जकारांडा वृक्ष के बारे में:

- जकारांडा वृक्ष, जकारांडा जीनस से संबंधित है जिसकी विभिन्न प्रजातियां दुनिया भर के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाई जाती हैं।
- यह अपने आकर्षक बैंगनी-नीले फूलों के लिए जाना जाता है जो वसंत ऋतु के दौरान गुच्छों में खिलते हैं।
- यह मूल रूप से दक्षिण अमेरिका, विशेष रूप से अर्जेंटीना और ब्राजील का स्थानिक है।
- अपने प्रचुर फूलों के साथ, यह मधुमक्खियों, तितलियों और पक्षियों जैसे परागणकों को आकर्षित करता है जो स्थानीय पारिस्थितिकी प्रणालियों की जैव विविधता में योगदान देता है।





मोरारजी देसाई



मोरारजी देसाई (29 फरवरी 1896-10 अप्रैल 1995)

स्वतंत्रता सेनानी और पूर्व भारतीय प्रधान मंत्री मोरारजी देसाई का जन्म गुजरात के भदेली गाँव में हुआ था।

योगदान:

- वह 1930 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान कांग्रेस में शामिल हुए।
- स्वतंत्रता संग्राम के दौरान वे कई बार जेल गए, व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लिया और 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन का समर्थन किया।
- उन्होंने 1975 में आपातकाल के दौरान गिरफ्तार किया गया था और उन्होंने गुजरात में नव निर्माण आंदोलन उन्होंने भारत के चौथे प्रधान मंत्री के रूप में कार्य किया।

पुरस्कार और सम्मान:

- मोरारजी देसाई को 1990 में पाकिस्तान में निशान-ए-पाकिस्तान और 1991 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया था।
- नैतिक मूल्य:** अखंडता, सामाजिक न्याय, सत्यता, अहिंसा, आदि।

सुर्खियों में स्थल

अल्बानिया

हाल ही में, यूक्रेनी राष्ट्रपति ज़ेलेन्स्की ने अल्बानिया में एक शिखर सम्मेलन में भाग लिया, जहां उन्होंने रूस के साथ बढ़ते तनाव के बीच बाल्कन देशों से हथियार और समर्थन मांगा।

अल्बानिया (राजधानी: तिराना)

अवस्थिति: अल्बानिया, जिसे आधिकारिक तौर पर अल्बानिया गणराज्य के रूप में जाना जाता है, बाल्कन प्रायद्वीप पर दक्षिणपूर्वी यूरोप में स्थित एक देश है।

भौतिक सीमाएँ: अल्बानिया अपनी सीमा उत्तरी मैसेडोनिया (पूर्व), कोसोवो (उत्तरपूर्व), मॉन्टेनेग्रो (उत्तरपश्चिम), ग्रीस (दक्षिण और दक्षिणपूर्व), एड्रियाटिक सागर (पश्चिम) और आयोनियन सागर (दक्षिणपश्चिम) के साथ साझा करता है।

भौतिक विशेषताएँ:

- उत्तरी मैसेडोनिया की सीमा पर स्थित माउंट कोरब, अल्बानिया की सबसे ऊंची चोटी है।
- अल्बानिया की प्रमुख नदियों में ड्रिन, मैट और वजोस नदियाँ शामिल हैं जो देश के विभिन्न क्षेत्रों से होकर बहती हैं।
- अल्बानिया कई झीलों का घर है, जिनमें शकोड्रा झील (मॉन्टेनेग्रो के साथ साझा), ओहरिड झील (उत्तरी अल्बानिया के पास क्रोमियम, तांबा, लोहा, निकल और पेट्रोलियम सहित महत्वपूर्ण खनिज संसाधन हैं, जो इसकी अर्थव्यवस्था और औद्योगिक क्षेत्र में योगदान करते हैं)।



POINTS TO PONDER

- हाल ही में लोकपाल के अध्यक्ष के रूप में किसे नियुक्त किया गया है? - **सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश जस्टिस अजय माणिकराव खानविलकर**
- हाल ही में किस संगठन ने यूरोप में अपना सबसे बड़ा सैन्य अभ्यास शुरू किया, जिसका नाम स्टीडफ़ास्ट डिफेंडर 2024 है? - **उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो)**
- किस मंत्रालय ने SWAYAM प्लस प्लेटफॉर्म लॉन्च किया, जो SWAYAM मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स प्लेटफॉर्म का विस्तार है? - **शिक्षा मंत्रालय (एमओई)**
- हाल ही में प्रधानमंत्री ने किस योजना के तहत 554 रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास की आधारशिला रखी? - **एएमबीएस (अमृत भारत स्टेशन योजना)**
- कौन सा यूरोपीय देश उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) में शामिल होने के लिए तैयार है? - **स्वीड**

Face to Face Centres

